The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 7 | July 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

उपनिवेशवाद के विरोध से भारतीय राष्ट्रवाद तक की यात्रा

यशवीर सिंह (शोध छात्र)

डॉ विकास रंजन कुमार (सहायक आचार्य)

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बाजपुर, उत्तराखंड,email-yash 71989@gmail.com

DOI : https://doi.org/ 10.5281/zenodo.16874256

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 28-07-2025

Published: 10-08-2025

Keywords:

राष्ट्रवाद, राष्ट्रीयता, उपनिवेशवाद, राष्ट्रीय आंदोलन, शिक्षा प्रणाली, राष्ट्रीय आंदोलन

ABSTRACT

राष्ट्रवाद वह भावना है जो लोगो को एकता में बांधती है और स्वराज के प्रति विश्वास पैदा करके आंदोलन को ठोस आधार प्रदान करती है। वैश्विक संदर्भ में भारतीय राष्ट्रवाद की अवधारणा अति महत्वपूर्ण व विस्तृत अर्थ को समाहित करने वाली विचारधारा है। तथा इस विचारधारा को ब्रिटिश शासन, वैश्विक शक्तियों के प्रभाव तथा भारतीय पुनर्जागरण ने बल प्रदान किया।फलतः लोगो में स्वतंत्रता को प्राप्त करने तथा प्राचीन गौरव को स्थापित करने की भावना जागृत हुई। ऐतिहासिक रूप से देखा जाए तो प्राचीन भारतीय समाज में राष्ट्रवाद की भावना एवं देशभक्ति के मौलिक तत्व किसी न किसी रूप में सदैव विद्यमान रहे हैं। ब्रिटिश शासन की शोषणकारी नीति एवं कूटनीति ने भारत को राजनीतिक आर्थिक सामाजिक व सांस्कृतिक रूप से जर्जर एवं दयनीय बना दिया था। यद्यपि अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार व बढ़ते आवागमन के साधनों ने बौद्धिक शक्ति को जागृत किया। यही वह क्षण था, जहाँ से भारतीय राष्ट्रवाद का उदय हुआ। इसी राष्ट्रवाद ने राष्ट्रीय आंदोलन को जन्म दिया जो अपने आप में एक अनूठा आंदोलन बन गया था। फलस्वरूप भारत में राजनीतिक जागृति के साथ-साथ सामाजिक व धार्मिक जागृति का सूत्रपात हुआ।

परिचय- राष्ट्रवाद एक सशक्त अवधारणा है। यह किसी देश के निवासियों की अपने देश के प्रति सर्वाधिक निष्ठा व प्रेम को अभिव्यक्त करता है। विभिन्नताओं वाला देश भारत जहाँ विभिन्न धर्म, जाति, संस्कृति, प्रजाति, भाषा आदि के लोग निवास करते हैं किंतु मानवीयता स्व बंधुत्व के भाव से हमेशा जुड़े रहे हैं। हालांकि राष्ट निर्माण की ऐतिहासिक प्रक्रिया देश और काल की सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक स्थिति के अनुसार भिन्न-भिन्न समाजो में भिन्न-भिन्न रही हैं।18वीं शताब्दी में देशानुराग शासक वर्ग की अभिलाषा और प्रयास का विषय थी। 19वीं शताब्दी के स्वदेश भाव ने मध्यम के आयवर्ग के साथ-साथ बुजुर्आ आंदोलन का स्वरूप ग्रहण किया। 20वीं शताब्दी में राष्ट्र प्रेम जनमानस का आंदोलन बन गया। ब्रिटिश शासन ने नवीन

सामाजिक व आर्थिक व्यवस्था तथा नूतन प्रशासनिक प्रणाली और आधुनिक शिक्षा में विचार से नए वर्गों के उदय का मार्ग प्रशस्त किया। इन नवीन वर्ग को स्वतंत्रता, समानता,स्वराज अधिकारों की मांग आदि विषय पर ब्रिटिश समाज से टकराव आरंभ हो गया। यही भारतीय राष्ट्रवाद के उत्थान की प्रक्रिया की आधारशिला ही नहीं प्रेरणा स्रोत भी बना।

अध्ययन का उद्देश्य -

1- राष्ट्रवाद का अभिप्राय क्या है?

2- राष्ट्रवाद क्यों आवश्यक है?

3- भारतीय राष्ट्रवाद के विकास में सहायक तत्वों की भूमिका को समझना।

अध्ययन पद्धति एवं उपकरण-

ब्रिटिश उपनिवेशवाद के विरोध में जन्मी भारतीय राष्ट्रवाद की विचारधारा को समझने के लिए विभिन्न इतिहासकार की रचनाएं, पत्र-पत्रिकाओं में छपे लेखो तथा विद्वानजनों की लेखनी को आधार बनाया गया है। साथ ही ऐतिहासिक व व्याख्यात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया।

पूर्व साहित्य की समीक्षा-

"उपनिवेशवाद के विरोध से भारतीय राष्ट्रवाद तक की यात्रा" के संदर्भ में उपलब्ध साहित्य का अवलोकन, विश्लेषण मूल्यांकन किया गया है यथा –

1- प्रोफेसर इरफान हबीब, इंडियन नेशनलिज्म, एलेफ बुक कंपनी, नई दिल्ली, 2017.

इस पुस्तक में भारतीय राष्ट्रवाद पर स्वतंत्रता पूर्व के राष्ट्रवादियों के तथ्य परख विचारों पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही राष्ट्रवाद पर सामाजिक व धार्मिक आंदोलनो के प्रभाव को भी रेखांकित किया गया है।

2- ए.आर.देसाई, भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि, 2014.

भारतीय राष्ट्रवाद के उद्भव की जटिल प्रक्रिया और उसके विभिन्न रूपों को इस पाठ्य पुस्तक में दर्शाया गया है। इतना ही नहीं सामाजिक व धार्मिक आंदोलन के भारतीय राष्ट्रवाद पर पड़ने वाले प्रभाव का भी मूल्यांकन किया गया है।

3- राम लखन शुक्ला, आधुनिक भारत का इतिहास, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, 2008.

आधुनिक भारत में इतिहास लेखन की विषय वस्तु से प्रारंभ इस पाठ्यक्रम में 18वीं शताब्दी के भारत की सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक स्थिति का शब्द चित्र प्रस्तुत किया गया है। साथ ही उन तत्वों की विस्तृत व्याख्या की गई है जिन्होंने भारतीय राष्ट्रवाद की उत्पत्ति में महत्वपूर्ण योगदान दिया था।

4- शेखर बंधोपाध्याय, प्लासी से विभाजन तक और उसके बाद ओरिएंट ब्लैकस्वान, नई दिल्ली, 2016.

इस पुस्तक में भारतीयों की आकांक्षाओं, उनके संघर्ष व प्रतिरोध की कहानी को दर्शाया गया है। साथ ही भारतीय राष्ट्रवाद के उदय स्व विस्तार पर विस्तृत चर्चा की गई है।

औपनिवेशिक शोषण से राष्ट्रवादी चेतना तक -

निसंदेह, आधुनिक अर्थों में भारत 'राष्ट्र' ब्रिटिश शासन के काल में बना। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से औपनिवेशिक नीतियों और आर्थिक शोषण के विरुद्ध भारतीय समाज में जो भाव जागृत हुआ, ने भारतीय राष्ट्रीय चेतना का रूप धारण कर लिया। इस प्रकार की स्थिति निर्मित करने के लिए ब्रिटिश उदारवाद तथा उदारवादी विचारक और संस्थाएं भी उत्तरदाई रही हैं। ब्रिटिश शासन और विश्व शक्तियों के कारण तथा भारतीय समाज में उत्पन्न और विकसित अनेक भावना एवं वस्तुनिष्ठ कारको की क्रिया प्रतिक्रिया के फलस्वरूप ब्रिटिश काल में भारतीय राष्ट्रवाद का जन्म हुआ।[1]

व्यक्तियों का समूह जो एक निश्चित भू-भाग की सीमाओं में निवास करता है, जिसकी एक समान भाषा, रीति रिवाज तथा विचारधारा ही राष्ट्रवाद कहलाता है अर्थात राष्ट्रो के रूप में जन समुदायों का एकीकरण दीर्घकालीन ऐतिहासिक प्रक्रिया की परिणिति है।[2] राष्ट्रीय भावना के विकास के लिए एकता को होना आवश्यक है। भाषा, जाति, संस्कृति, आर्थिक हित आदि की एकता राष्ट्र के विचारों को और मजबूत बनाती है। इसके एक बार प्रज्वलित होने पर यह निरंतर बलवती होती जाती है।

टॉपनवी के शब्दों में "राष्ट्रवाद एक शक्ति है जो समाज या जाति को राज्यों के अंतर्गत एक निश्चित तौर में निरंकुश शक्तियों के विरुद्ध अपने अधिकारों की रक्षा के लिए एक साथ रहने को बाध्य करती है।[3]

ब्रिटिश शासन पूर्व गांव भारतीय अर्थव्यवस्था के मेरुदंड थे और आर्थिक संसाधनों का दोहन केवल अपने हितार्थ करते थे। ग्रामीण आर्थिक जीवन की मूल व्यवस्था का श्रम विभाजन निम्न कोटि का था यह कृषि और उद्योग के अपर्याप्त विभाजन पर आधारित था।[4] गांव विभिन्न जातियों में बटे थे और सर्वथा एकता का अभाव था। इस विखरे समाज को एक धागे में पिरोय जाने की आवश्यकता थी क्योंकि इनका मिलन ही नवीन राष्ट्र की पटकथा लिख सकता था।

19वीं सदी के पूर्वार्ध ब्रिटिश हुकूमत ने अपने स्वार्थ बस अंग्रेजी शिक्षा को प्रोत्साहन दिया। इसका मानना था कि, "यदि किसी देश को दास रखना है तो उसके साहित्य और संस्कृति का विनाश कर देना चाहिए।"[5] नवीन शिक्षा के प्रसार ने भारतीयों को बौद्धिकता की तलवार प्रदान की जिसने सामाजिक गतिशीलता, वैज्ञानिक विचारधारा एवं औद्योगिक आंदोलन का सूत्रपात किया। अंग्रेजों का मानना था कि भारत परिवर्तित राष्ट्र बन जाएगा और हिंदूवाद का स्थान यूरोपीय ज्ञान ले लेगा। फलतः ज्ञान और शक्ति जनता के हाथ में होगी जो धार्मिक और सामाजिक सुधारो में सहयोग देगी।[6] आधुनिक शिक्षा के अग्रणी राजा राममोहन राय के मतानुसार पाश्चात्य शिक्षा- साहित्य, विज्ञानं स्व दर्शन द्वारा भारतीयों का नैतिक सुधार हो सकता है और भारत खोए हुए गौरव को पुनः प्राप्त कर पाएगा।[7] अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार प्रसार ने वहां परंपरागत व रूढ़िवादी विश्वासों पर प्रहार किया तो वहीं राष्ट्रवाद के उत्थान हेतु आवश्यक प्रगतिशील विचारों का मार्ग भी प्रशस्त किया।अंग्रेजी शिक्षा का सर्वाधिक सकारात्मक पक्ष यह रहा कि भारतीय एक भाषा के धागे से बंध गए और राष्ट्रवादी विचारों का आदान-प्रदान आसान हो गया।

ब्रिटिश कंपनी ने अपने आर्थिक हितों की पूर्ति लिए परिवहन में सुधार आवश्यक समझा और रेलों का विकास, डाक-तार की व्यवस्था तथा सड़कों का निर्माण किया।[8] लेकिन आवागमन के इन साधनों के विकास में भारतीयों को सामाजिक व राजनैतिक स्तर पर एक सूत्र में बांधने का कार्य किया। राष्ट्रीय नेताओं की पहुँच आमजन तक आसान हो गई और उनके विचारों ने लोगों में नव रक्त का कार्य किया। निःसंदेह यातायात के नवीन और आधुनिक साधनों का भारतीय राष्ट्रवाद के उदय में सशक्त योगदान रहा।

राष्ट्रवादी विचारों के प्रवाह में समाचार पत्र और साहित्य का योगदान अद्वितीय रहा है। समाचार पत्रों ने राष्ट्रीय नेताओं व संगठनों की आवाज को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य किया। इनके विचारों ने लोगों को स्वतंत्रता, समानता, स्वदेश आदि के विचारों से भावविभोर कर दिया। ए.आर.देसाई लिखते हैं, "17वीं, 18वीं और 19वीं शताब्दियों में समन्वित्त होने के लिए, सामंती अभिजात्य द्वारा परिपोषित सामंती अनैक्य के विरुद्ध संघर्ष के लिए, राष्ट्रीय राज्य, समाज और संस्कृति की स्थापना के लिए यूरोप के देशों ने समाचार पत्रों के दूजैय अस्त्र का उपयोग किया।[9] भारतीय राजनीति पर गहरी छाप छोड़ने वाले अखवारों और पत्रिकाओं में संवाद कौमुदी,मितमुल अखबार, समाचार चंद्रिका, प्रभाकर पत्र, मुंबई समाचार, अमृत बाजार पत्रिका आदि प्रमुख थे।[10]

सामाजिक-धार्मिक आंदोलन भारतीय राष्ट्रवाद की प्रथम अभिव्यक्ति थे जो 19वीं शताब्दी में भारतीय पुनर्जागरण के विभिन्न चरणों में हुए थे। इन आंदोलनों ने भारतीय जीवन के सभी क्षेत्रों को प्रभावित किया और राष्ट्रीय जागृति की मशाल को प्रज्वलित करने का महान कार्य किया। यह आंदोलन पश्चिमी सभ्यता से तर्क, समानता और स्वतंत्रता की भावना प्राप्त करने तथा प्राचीन भारतीय सभ्यता के दोषों को दूर कर एक नवीन राष्ट्रीय आधार प्रदान करने में सफल रहे।[11] भारतीय समाज का अभिन्न हिस्सा रहीं बल विवाह,दहेज़ प्रथा तथा छुआछूत जैसी बुराइयों का ब्रह्म समाज, आर्य समाज, रामकृष्ण मिशन तथा थियोसोफिकल सोसायटी ने समाधान कर नवजागृति का संपादकीय कार्य किया।[12] अंततः भारतीय समाज में आत्म बल स्वं विश्वास पुनः स्थापित हुआ और राष्ट्रीयता की भावना को जागृति मिली।

सामाजिक व धार्मिक संस्थाओं के समान ही भारत में राष्ट्रीयता की भावना को जागृत करने में राजनीतिक संगठनों का योगदान भी बहुमूल्य रहा है। इन संस्थानों में लैंडहोल्डरसोसाइटी, ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन, मद्रास नेटिव एसोसिएशन, मुंबई एसोसिएशन इत्यादि प्रमुख है।[13] राष्ट्रवादी संगठनों के प्रयासों ने राष्ट्रीय आंदोलन को मजबूत बनाया। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के बाद भारत में राजनीतिक जागृति का नया अध्याय प्रारंभ हुआ। कांग्रेस के मंच से देश के सभी प्रतिभाशाली बुद्धिजीवियों ने अंग्रेजी शासन के विरुद्ध अपनी आवाज उठाई तथा राष्ट्रवाद को एक नई दिशा प्रदान की।[14]

निष्कर्ष-

आधुनिक भारत में राष्ट्रवाद के उत्थान की अवधारणा आधुनिक, नवविकसित और उपनिवेश की दासता से मुक्त परंपरागत समाजो की राजनीतिक एवं क्रिया व्यवस्था में रखी जा सकती है। राष्ट्रवाद में आधुनिक मानव समुदाय के आंतरिक संबंधों, विचारों, आर्थिक एवं राजनीतिक प्रघटनाओं और सर्वागीण विकास के प्रत्येक पहलू को प्रभावित किया है। भारत के संदर्भ में

स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए जिन आंदोलनों का सहारा लिया गया, उसका ऐतिहासिक महत्व यह है कि उन्होंने सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक व्यवस्थाओं में जो परिवर्तन किया है, उसको आंतरिक सूत्रबद्धता के कारण राष्टवाद का उत्थान होता रहा। ब्रिटिश शासन के विकासशील स्वरूप ने यदि राष्ट्रवाद के जन्म के लिए अप्रत्यक्ष रूप से योगदान किया तो उसके प्रतिक्रियावादी स्वरूप से ने इस प्रक्रिया को तेज किया।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- देसाई, ए. आर. भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि, ट्रिनिटी प्रेस, नई दिल्ली, 2014, पृ. 4.
- 2- सिंह, ए.पी. (स), भारत में राष्ट्रवाद, ओरियंट ब्लैकस्वान, नई दिल्ली, 2014, पृ. 5.
- टॉयनबी, ए. नेशनलिटी इन हिस्ट्री एंड पॉलिटिक्स, थर्ड एडिशन, लंदन 1949 पृ. 12.
- राय, डॉ. सत्या एम., भारत में उपनिवेशवाद एवं राष्ट्रवाद, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली, 2013, पृ. 110.
- शुक्ला, आरं. (सं), आधुनिक भारत का इतिहास, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली, 2008. पृ. 294.
- लुणिया, बी.एन. आधुनिक भारत का इतिहास - जनजीवन और संस्कृति कमल प्रकाशन, इंदौर, 2005, पृ. 572.
- भट्ट, जी., भारतीय नवजागरण प्रणेता तथा आंदोलन, साहित्य सदन देहरादून, 1968, पृ. 211.
- कुमार डी. (सं). द केंब्रिज इकोनामिक हिस्ट्री इन इंडिया, भाग 2, कैंब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, कैंब्रिज, पृ. 736
- देसाई, ए. आर., पूर्वोल्लिखित पृ. 177.
- राय. डॉ. सत्या एम. (सं). पूर्वोल्लिखित पृ. 222.
- चंद्र, विपिन, आधुनिक भारत का इतिहास, ओरियंट ब्लैकस्वान, नई दिल्ली, 2012, पृ. 115.
- सिंह अयोध्या भारत का मुक्ति संग्राम ग्रंथ शिल्पी दिल्ली 2012 पृष्ठ 41-42.
- शेखर, बी., पलासी से विभाजन तक और उसके बाद, ओरियंट ब्लैकस्वान, नई दिल्ली, 2016, पृ. 214.
- चंद्र. विपिन, भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, 2010, पृ. 47.